८४: अनुभव शुद्धि

३०-०६-१३

अनुभव शुद्धि का स्वरूप सह-अस्तित्व में अनुभव होने पर ही प्रमाणित होता है | अनुभव शुद्धि के आधार पर ही विचार शुद्धि, विचार शुद्धि के आधार पर ही कार्य शुद्धि, व्यवहार शुद्धि को प्रमाणित होता हुआ देखा गया है | सह-अस्तित्व नित्य वर्तमान होना पाया जाता है | सह-अस्तित्व का स्वरूप व्यापक वस्तु रूपी सत्ता में एक-एक वस्तु रूपी प्रकृत; वह जड़, चैतन्य रूप में सम्पृक्त रहना पाया जाता है | यही सह-अस्तित्व में अनुभव का मूल वस्तु है | ऐसा अनुभव ही शुद्ध रूप में मानव संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था के रूप में प्रकाशित होता है जिससे हर व्यक्ति, हर देश काल में सुखी होना होता है | इसी आधार पर विकल्प को प्रस्तुत किया है | इसी क्रम में अर्थात कार्य-व्यवहार शुद्धि, विचार शुद्धि, अनुभव शुद्धि का स्वरूप स्पष्ट होता है | अनुभव शुद्धि के आधार पर ही अर्थात सह-अस्तित्व में अनुभव के आधार पर ही विचार शुद्धि एवं कार्य-व्यवहार शुद्धि होता है | दूसरा कोई विधि होता नहीं | यही क्रम है |

शुद्धि क्रमबद्ध होने से मानव परम्परा बनता है | मानवपरम्परा का मतलब मानव संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था एक भाषा है | मानव संस्कृति अपने आप में मानवत्व के रूप में प्रमाणित होता है | यही कार्य-व्यवहार में शुधि होने का मतलब है | व्यवहार शुद्धि मानवीयतापूर्ण जीवन से प्रारंभ होता है जो अध्ययन एवं गुणात्मक परिवर्तन का ही देन है | व्यवहार, विचार पर आधारित है | विचार, व्यवहाराभ्यास पूर्वक परिवर्तित है | इसकी स्थिरता के लिए अध्ययन एवं अवधारणा आवश्यक है | व्यवहार शुद्धि क्रम में विचार शुद्धि होना होता ही है | विचार शुद्धि का पूर्णता देव चेतना में ही होना होता है | इसकी निरंतरता के लिए अनुभव आवश्यक है | इस ढंग से कार्य-व्यवहार विचार शुद्धि के बिना होता नहीं | विचार शुद्धि के लिये अनुभव शुद्धि होना बहुत आवश्यक है | अनुभव शुद्धि के मूल में सह-अस्तित्व ही है | सह-अस्तित्व में अनुभव होना ही शुद्धता का मतलब है | इस क्रम में मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना ज्ञान एवं प्रमाणित होना स्पष्ट होता है | यह अविभाज्य रूप में होता है | मानव कार्य-व्यवहार, विचार, अनुभव करता ही है | यही मानव का गरिमा है | मानव ही इसका अधिकारी है | शेष तीनों अवस्था में यह नहीं है | अर्थात जीव संसार में, प्राण संसार में, पदार्थ संसार में अनुभव करने की क्षमता नहीं है | अनुभव करने का क्षमता केवल ज्ञानावस्था में पाये जाने वाले मानव में ही पाया जाता है |

अनुभव अवश्यम्भावी है | सह-अस्तित्व में अनुभव ही समाधान के रूप में प्रमाणित होता है | समाधान= सुख होता है | दूसरा विधि से तलाशने से पता लगता है कि हर मानव सुखी होना चाहता है | अभी तक जितना जो कुछ भी किया है सुखी होने के लिये किया है | इसको विधि कहा जाय या निषेध कहा जाय | वैसे निषेध के मूल में सुख होने का प्रमाण ही विधि है | ऐसा प्रमाण का स्वरूप में प्रमाण तीन स्वरूप में होता है | यह कार्य-व्यवहार प्रमाण, विचार प्रमाण, अनुभव प्रमाण है | अनुभव प्रमाण सम्मत विचार और व्यवहार ही सुखप्रद होता है | दूसरा विधि से सुख की निरन्तरता होना होता ही नहीं | अनुभव ज्ञान के अनुरूप प्रतिरूप विचार, व्यवहार-कार्य करना ही सर्वमंगलमय है |

यही अनुकरण, स्वीकार, अध्ययन एवं अभ्यास है | इसी विधि से सुखी होना बनता है | दूसरा विधि नहीं है | भौतिकवादी विधि से, आदर्शवादी (आध्यात्मवाद, अदिभौतिक्वाद, अदिदेवीवाद) विधि से अनेक प्रयोग हो चुके हैं | भौतिकवादी इन्द्रीय सुख के लिए दौड़ लगाया | आध्यात्मवादी विरक्ति-स्वांत: सुख-मोक्ष के लिए उपदेश दिया | आदर्शवादी काल्पनिक सुख-आचरण के लिए, अदिदेवीवादी रहस्य-स्वर्ग-इश्वर वरदान में ले गए | सर्वमानव को शुभ रूपी सुख उपलब्ध नहीं हुआ | परम्परा नहीं बना, इसीलिये विकल्प को प्रस्तुत करना पड़ा | विकल्प में अध्ययन पूर्वक समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व प्रमाण पहला है;जिसमें से समाधान के बराबर में सुख होना पाया गया है | सुखवादी परम्परा ही मानव परम्परा है | इसे पा लेना ही मानवत्व है, देवत्व, दिव्यत्व है, जिसमें कार्य-व्यवहार प्रमाण, विचार प्रमाण, अनुभव प्रमाण, प्रमाणित होता है |

-मुगडी अग्रहार नागराज | प्रणेता एवं लेखक मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद | अमरकंटक